भारतीय संस्कृति एवं साहित्य में मानव मूल्य

डॉ० ओकेन्द्र
डॉ० बालक राम भद्री
डॉ० शांति विश्वनाथन

भारतीय संस्कृति एवं साहित्य में मानव मूल्य

सम्पादक
डॉ० ओकेन्द्र
डॉ० बालक राम भद्री
डॉ० शांति विश्वनाथन

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स
वी-508, गली नं.17, विजय पार्क,
दिल्ली-110053
मो. 08527460252, 09990236819
ईमेल: jtspublications@gmail.com

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

भारतीय संस्कृति एवं साहित्य में मानव मूल्य

सम्पादक
डॉ० ओकेन्द्र
डॉ० बालक राम भद्री
डॉ० शांति विश्वनाथन

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

दूसरा संशोधित संस्करण : २०२३
ISBN 978-93-5811-037-1

प्रकाशक
जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स
वी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३
दूरभाष : ०८५२७ ४६०२५२, ०११-२२६११२२३
E-Mail : jtspublications@gmail.com
मूल्य : ६६५.०० रूपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली
मुद्रक : तरूण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

Bhartiye Sanskriti evam Manav Mulay Edited by
Dr. Okendra, Dr. Balak Ram Bhadri, Dr. Shanti Vishvanathan

१४. तमिल ग्रंथ 'पलमोलि नानूरू' में नीति १८४
डॉ. एन. सेल्वराज

१५. चुनी हुई लेखिकाओं के कथा साहित्य में मूल्य परिवर्तन की विभिन्न दिशाएँ १८६
डॉ. शोभना कोक्काड़न

१६. मध्यकालीन सन्त साहित्य में अंतर्निहित मानव जीवन मूल्य १९७
डॉ. जायदा सिकंदर शेख

१७. मानव मूल्य की परिकल्पना : अर्थ, स्वरूप और विकास २०२
डॉ. अर्चना वर्मा

१८. सन्त साहित्य और मानव मूल्य २०६
गीतु दास, डॉ. जी. शांति

१९. मानव मूल्य : कबीरदास के काव्य में दार्शनिकता और रहस्यवादिता २१८
डॉ. हेमचन्द्र दुबे

२०. पावन जीवन का एकमात्र आधार : राम नाम २२७
डॉ. के. एन. एल. वी. कृष्णवेणी

२१. भारतीय लोक साहित्य की प्रासंगिकता एवं मानव जीवन मूल्य २३९
डॉ. पल्लवी सिंह 'अनुमेहा'

२२. भारतीय संस्कृति और साहित्य में मानव मूल्य २४६
प्रसादराव जामि

२३. भारतीय संस्कृति और साहित्य में जीवन मूल्य २५०
डॉ. डी. एस. भण्डारी

२४. भारतीय लोक साहित्य में अंतर्निहित : जीवन मूल्य २५९
डॉ. मोहनी दुबे

२५. समकालीन आदिवासी कविता में वदलते मानव मूल्य २६४
पामिला पात्रो

२६. मानव मूल्य के विकास में परिवार की भूमिका २६८
डॉ. राजेंद्र प्रसाद

२७. वैदिक साहित्य में पर्यावरणीय मूल्यों की अभिव्यक्ति २७९
डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह

२८. डॉ. एन.ई. विश्वनाथ अय्यर के निबन्धों में अनेकता में एकता का भाव २८४
रोधिनी एस.

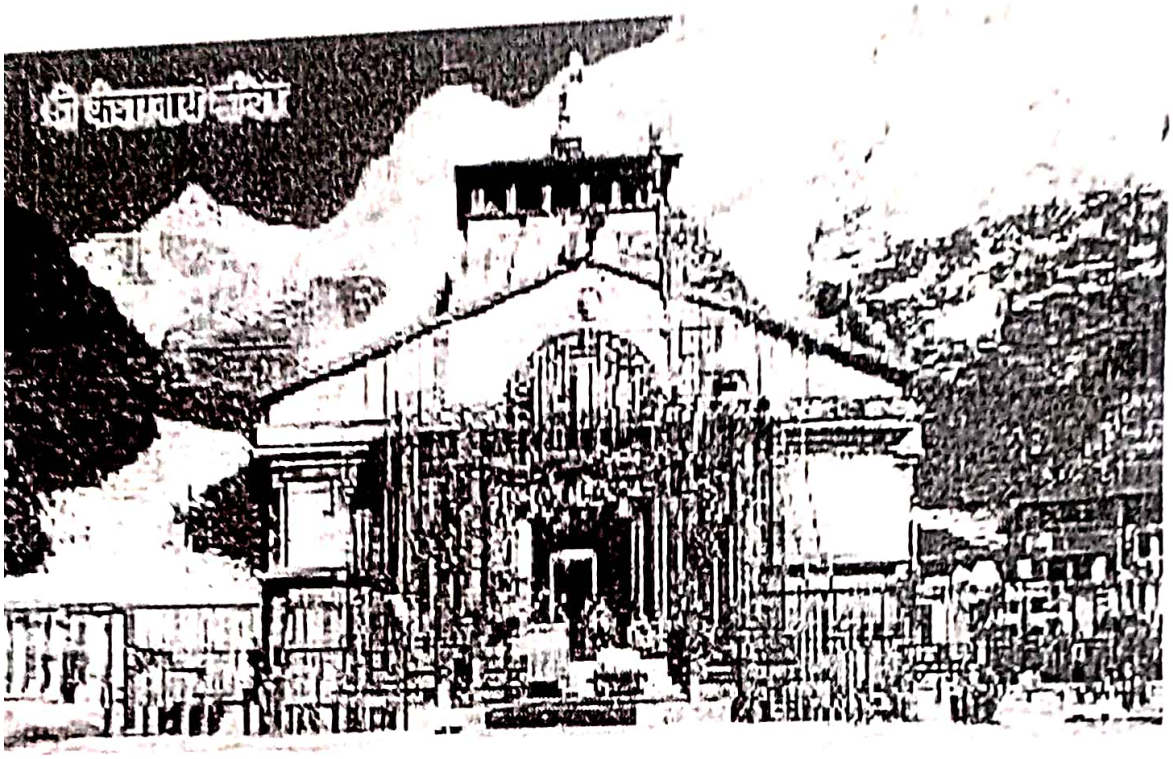

देवभूमि उत्तराखण्ड के 'ऊखीमठ' का धार्मिक-सांस्कृतिक महत्व :

गढ़वाल–मण्डल अर्थात् केदारखण्ड! प्राचीन–काल में ढ़वाल–मण्डल को केदारखण्ड नाम से जाना जाता था प्राचीन ग्रन्थों केदारखण्ड का विस्तृत उल्लेख मिलता है। उत्तराखण्ड का इतिहास राणिक है। उत्तराखण्ड का शाब्दिक अर्थ उत्तरी भू–भाग का रूपान्तर । इस नाम का उल्लेख प्रारम्भिक हिन्दू ग्रन्थों में मिलता है, जहाँ पर दारखण्ड (वर्तमान गढ़वाल) और मानसखण्ड (वर्तमान कुमाऊँ) के रूप इसका उल्लेख मिलता है। उत्तराखण्ड प्राचीन पौराणिक शब्द भी है हिमालय के मध्य फैलाव के लिए प्रयुक्त किया जाता था। तराखण्ड "देवभूमि" के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि यह समग्र त्र धर्ममय और दैवशक्तियों की क्रीड़ाभूमि तथा हिन्दू धर्म के उद्भव र महिमाओं की सारगर्भित कुंजी व रहस्यमय है। उत्तराखण्ड का र्मिक महत्व होने के कारण ही इसे 'देवभूमि' कहा जाता है। जहाँ र्मिक सहिष्णुता, आपसी भाइचारे, राष्ट्रीय एकता और बन्धुत्व की ना तथा वसुधैव कुटुम्बकम् की परिकल्पना सार्थक फलीभूत प्रतीत ी है। उत्तराखण्ड में हरिद्वार को साधु–संतों की 'धर्म–नगरी' के रूप मान्यता है। कुछ लोग 'हरिद्वार' को 'संत–नगरी' के रूप में भी भाषित करते हैं। धार्मिक महत्व होने के कारण हरिद्वार साधु–संतों धार्मिक–शिक्षा का केन्द्र है, क्योंकि यह संतों की तपस्थली के रूप

करनेवालों से सावधान होना चाहिए। कपटी मित्र हमेशा दूसरों को हानि पहुँचेगा। वे लोग दो सिर चींटी की तरह होता है। इन लोगों से बुराई ही होता है। **'इरूतलै कोल्ली एण्भार'** कहावत इसका उदाहरण है।

बेईमान आदमी के बारे में : उपयोग करनेवाला चीज हमारे हाथ में चिपकता है। रसोई बर्तन रसोइया के हाथ में चिपकता है। उसी प्रकार एक काम करते समय उसका फल को सारे भोगनेवाले बेईमान आदमी के पास काम करवाना बेकार है। क्योंकि वे मूर्ख लोग है। इस कहावत में इस पर प्रकाश डाला गया है **'अट्टारै ओट्टाक् कलम'**।

उपसंहार : मुहावरों का प्रयोग बोलचाल भाषा में अधिक लोग उपयोग करते हैं। नीतिवचन समुदाय में हम शुध्द जीवन बीतने के लिए रास्ता बताते हैं। छोटे–छोटे वाक्य में ज्यादा उपदेश देनेवाले नीतिवचन उत्तम माना जाता है। **'पलमोलि नानूरू'** नीतिग्रंथ तमिल नीति ग्रंथ में एक प्रसिध्द ग्रंथ है। इसमें चार सौ पद्य जीवन को सुधार करने के लिए जो उपदेश चाहिए, उसको सुलभ बताने के लिए पहला स्थान पाता है।

सहायक ग्रंथ सूची :–

१. 'पलमोलि नानूरू', मुन्रुरै अरैयनार
२. तमिल पलमोलि ग्रंथ
३. Chennailibrary.com
४. रामायण, कम्बर

१५

चुनी हुई लेखिकाओं के कथा साहित्य में मूल्य परिवर्तन की विभिन्न दिशाएँ

–डॉ॰ शोभना कोक्काड़न

मूल्य शब्द का उद्‌भव और विकास मानव जीवन के आरंभ से ही माना जाता है। आदिकाल में मानव जीवन और मानव समाज के साथ ही मूल्यों का भी उदय हुआ और मानव जीवन के प्रगति के साथ साथ निरंतर चलता फिरता है। मूल्य वास्तव में मानव जीवन के ऐसे लक्ष्य हैं, दृष्टिकोण है जो समाज द्वारा स्थापित किए जाते हैं, जो हर एक व्यक्ति के लिए पूजनीय हैं, जो अदृश्य अव्यक्त रूप में मानव के सभी व्यवहारों और चिंताओं को संचालित और नियंत्रित करते हैं।

भारतीय संस्कृति की आधार शिला मानव मूल्यों पर ही टिकी हुई है। मूल्य को मनुष्य के कार्य और व्यवहार का नियमन करने वाले प्रतिमानों के रूप में स्वीकारा है। वह सामाजिक सम्बन्धों, मानवीय रिश्तों को संतुलित एवं संयमित करके सामाजिक व्यवहारों में एकरूपता स्थापित करते हैं। समाज या राष्ट्र की प्रगति भौतिक संसाधनों पर ही नहीं, बल्कि उस राष्ट्र के नागरिकों द्वारा व्यवहृत मूल्यों पर भी आधारित होती है। "मूल्य मनुष्य को पशुता से ऊपर उठाकर उसका उन्नयन करनेवाली विवेक चेतना है। मूल्य मानवता की कसौटी है। मूल्य, जीवन मूल्यों को दिशा निर्देश प्रदान करते हैं, लक्ष्य तक पहुँचने के सोपान है"।[1]

"धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार"– मूल्य और 'प्रतिमान' समानार्थी शब्द है ।दोनों ही मानव निर्मित निकष या कसौटियाँ है, जिनके सहारे साहित्य की परख की जाती है। मनुष्य चूंकि पहले व्यक्ति है, इकाई है,– इसके अपने कुछ मूल्य होते हैं। परंतु व्यक्ति, मनुष्य एक बृहत्तर–मानव समाज का, परिवार, नगर, प्रदेश, प्रांत, राष्ट्र, या संसार

Professor & Head, Dept-of Hindi, Avinashilingam Institute for Home Science and Higher Education for Women (Deemed to be University) Coimbatore 641043(Tamil Nadu)

का सदस्य, नागरिक, सामाजिक विशेष होकर सामान्य अंग भी है, अतः उसके विचार, कर्म और कल्पना में मूल्य का प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है।[२]

मानव, समाज और नैतिक मूल्यों का गहरा संबंध है। यदि नैतिकता न हो तो मानव जीवन गलत राह पर चल पड़ता है। मानव का आचरण इसी नैतिकता से जुड़ा हुआ है। जब यह आचरण अनुचित और गलत हो जाता है, तब नैतिक मूल्य विघटन की स्थितियाँ पैदा हो जाती है। नैतिक मूल्य सदा मानसिक स्वभाव पर निर्भर रहता है। बदलते समय के साथ विभिन्न स्तरों पर जो मूल्य विघटन हो रहे हैं, उन्हें समय के साथ साहित्यकार अपनी रचनाओं में चित्रित करते आ रहें हैं।

पारिवारिक विघटन

परिवार समाज की एक इकाई है। जब परिवार संगठित होकर एक दूसरे का खयाल रखते हुए जीवन में आनेवाली कठिनाइयों का सामना करते हैं तभी मूल्यों का संरक्षण होता है। पारिवारिक मूल्य विघटित हो तो समाज और राष्ट्र का निर्माण कठिन होता है। वर्तमान संदर्भ में पारिवारिक मूल्यों के विघटन है। संयुक्त परिवार प्रथा भारतीय संस्कृति का मूलाधार रही है। आधुनिकता, व्यक्तिवादिता, औद्योगीकरण और नगरीकरण के फलस्वरूप इसका विघटन हुआ। परिवार के संबंध में अपेक्षित दया, प्रेम, सहानुभूति और सहयोग भावना, में शिथिलता आ गई। ममता कालिया का 'उड़ान" में परिवर्तित जीवन मूल्यों की विकृत स्थिति का ज्वलंत उदाहरण है। इस कहानी में नई पीढ़ी का एक लड़का साही साधारण माहौल में पढ़कर बड़े पद पर आसीन होता है। आज के इस वैज्ञानिक युग में साही भी मल्टी नॅशनल कंपनियों के प्रति आकर्षित होता है, तत्परता से व्यापार प्रबंधन की पढ़ाई पूरी करता है, पदोन्नति और वेतन वृद्धि भी होती है। साही को ग्रामीण परिवेश से भी अधिक शहरीय परिवेश अच्छा लगता है। वह अपने 'कैरियर' में सबसे आगे उडना चाहता है। साही अपने पापा से घर से विदा लेते हुए कहता है– "पापा, आपके जमाने में ईमानदारी बहुत बड़ा गुण माना

जाता था, मेरे जमाने में समझदारी इससे बड़ा गुण है और तो और बफादारी, ईमानदारी अब इन्सानों की नहीं, कुत्तों की खासियत है, और मैं किसी कंपनी का वफादार कुत्ता कहलाना कभी पसंद नहीं करूंगा"।(ममता कालिया की कहानियाँ, ममता कालिया खंड 2 पृ–436

आधुनिक जीवन ज़टिल से जटिलतर होता जा रहा है। परिवार की संकल्पना में शिथिलता आ गई है। वैयक्तिक स्वतन्त्रता और सुख की आकांक्षा ने आधुनिक युवा पीढ़ी के सोच को बदल दिया है। ममता कालिया का 'दौड़' उपन्यास का नायक है पवन। पवन के अनुसार 'जहां हर महीने वेतन मिलते हैं, वही जगह अपनी होती है।[3]

स्टेला से उसने शादी की क्यों कि वह भी उसकी तरह कैरियर ओरिएंतेड़ है। स्त्री और पुरुष को समतुल्य मानने वाले पवन के नजरों में स्टेला को आदर्श बहू बनने की जरूरत नहीं थी। इसलिए उसकी माँ रेखा स्टेला को स्त्रियोजित काम सीखने की आवश्यकता पर बल देते है तो पवन कहता है– "माँ जब से मै ने होश संभाला है, तुम्हें स्कूल और रसोई के बीच दौड़ते ही देखा। मुझे याद है जब मैं सोकर उठता तुम रसोई में होती और जब मैं सोने जाता, तब भी तुम रसोई में होती। तुम्हें चाहिए कि स्टेला के लिए जीवन भट्टी न बने। जो तुमने सहा, वह क्यों सहे ?"[4]

रेखा मानवीय दुरबलताओं से युक्त एक साधारण मध्यवर्गीय परिवार की नारी है। रेखा को लगता था कि हर पीढ़ी का प्यार करने का ढंग अलग और अनोखा होता है।

मानवीय सम्बन्धों और मूल्यों का विघटन

भूमंडलीकरण के दौर में हर कहीं अर्थ को मुख्य स्थान मिलता है, त्याग और बलिदान जैसे भाव हल्के पड़ रहे हैं। इसके कारण मानवीय सम्बन्धों और मूल्यों का विघटन हो रहा है। चंद्रकांता का 'बाकी सब खैरियत 'उपन्यास का माहिर संयुक्त परिवार का है। यहाँ माँ बाप, बड़े बेटे विनू, पत्नी पारूल और दो बच्चे ऋता और बचचू है। छोट्टा लड़का अनुपम परिवार के साथ कैनडा में रहता है। जब उसे

विदेश में पैसों की जरूरत थी। विनू उसकी सहायता कर सका और माँ बाप ने अपने जेवर बेचकर उसे पैसे भेज दिया। इससे होकर भाइयों के बीच मनमुटाव होने लगा। अनु ने भाई की आर्थिक विषमता जाने बिना उनपर आरोप लगाया और अंत तक नाराज रहा। मौके बेमौके पर भाभी को अपमानित करता रहा। अनु को अपनी जिंदगी में एक निश्चित प्लान था,उसका हर काम नियोजित है। अनू और पारूल के बीच ऐसी रिश्ता थी कि वह उसके लिए दोस्त,भाई, देवर, बेटा, सबकुछ था, ऐसे जुड़े हुए लोग एक दूसरे के लिए अजनबी बन गए। अनू अपने माँ बाप को कैनडा ले गया। लेकिन वहाँ उन्हें अपनों के पास अतिथियों की तरह रहना पड़ा। पारंपरिक मूल्यों पर अडिग विश्वास रखने वाली माँ छोटी बहू निम्मी के बर्ताव को सह नहीं पायी। निम्मी आधुनिक विचरवाली है। उसका मानना है कि "जी चुके लोगों के लिए हम अपनी उगती हुई ज़िंदगी का गला थोड़े घोंट सकते है।[5]

अनू चेक भेजकर अपना दायित्व प्रकट करता है और 'ये करो, ये मत करो, जैसे आदेश देते रहते थे। घर के वातावरण में बच्चे ऊब जाते हैं। बचचू हॉस्टल में रहना पसंद करता है ऋता भी माँ जैसी होना नहीं चाहती, वह खुलकर बोलती है– "मुझे ऐसा घर चाहिए, जहां मेरी आइडैनटिटि बनी रहे। तुम्हारी तरह में हर बात में समझौते नहीं करूंगी। कितने दिन जिऊंगी अपनी सोच के मुताबिक जिऊंगी।[6]

प्रेम – नैतिकता में बदलाव

विवाह मूलतः व्यक्ति के धार्मिक एवं सामाजिक कर्तव्यों की पूर्ति के लिए तथा परिवार के कल्याण के लिए होनेवाला पवित्र संस्कार है। आजकल यह लोग माने लगे हैं कि यह एक सामाजिक अनुबंध है। भारत में पति कितना भी गलत हो, शोषण करें फिर भी बार बार अपमानित होकर पत्नी उसकी कमजोरियों को छिपाती है और उसके साथ रहने में ही अपनी भलाई समझती है। वर्तमान जगत में सम्बन्धों के बीच पुरानी आत्मीयता नहीं है। इसी कारण दाम्पत्य जीवन शादी के कुछ समय बाद ऊबाहट से भर जाता है। दाम्पत्य जीवन की मजबूरी के लिए सेक्स का महत्वपूर्ण स्थान है। सेक्स एक शारीरिक आवश्यकता

है। पति पत्नी के बीच की सेक्स भावना आत्मा और चाहत से जुड़ती है।

'मित्रो मरजानी' की नायिका मित्रो अपने दाम्पत्य जीवन में पति के सुख से वंचित है। वह शारीरिक अतृप्ति के कारण मानसिक रुग्णता से भी घिर गई है। वह अपनी अपरिमित सेक्स इच्छा से स्वयं परिचित है लेकिन पति उसकी परवाह नहीं पहचानता। मित्रो परिवार से विरक्त होकर अपने सुख आनंद की कल्पना में लीन रहती है। पति के साथ अतृप्ति का भाव उसके मन में वैवाहिक जीवन के बंधनों को तोड़ने पर विवश कर देते हैं। वह अन्य पुरुषों से संबंध स्थापित करने को उत्सुक हो जाती है। वह सामाजिक और पारिवारिक मान मर्यादा का संकोच भाव त्याग कर देती है, पुरातन नैतिक बंधनों को तोड़ने की ताकत रखती है। उसे अपने देह से बहुत प्रेम है। उसपर वह गर्व करती है। देह तृप्ति की इच्छा, यह यौन शक्ति वह अपनी पूंजी मानती है। जिसका पूर्ण उपभोग करना ही जीवन की सार्थकता समझती है। वह अपनी जिठानी से कहती है– "जिठानी मेरे जेठ से कह रखना जब तक मित्रो के पास यह इलाही ताकत है मित्रो मरती नहीं"।[7]

वह पर पुरुष से यौन सम्बन्धों को लेकर स्वतंत्र विचार रखती है । पति से स्वयम से विरक्त पाकर उसे बेअकल मर्द कहती है। मित्रो ऐसी एक अनूठी नारी पात्र है जिसने नारी चित्र के सभी परंपरागत प्रतिमानों और उपमानों से पृथक एक नवीन रूप धारण किया है। मित्रो समाज को चुनौती देती हुई दृढ़ता से अपनी बात को उजागर करती है। उसे कुछ भी कहने में किंचित संकोच नहीं होता। वह एक निस्संकोची एवं निर्मम चरित्र है। वह अपने कथन में जितनी वाचाल, सुस्पष्ट व कठोर है उतनी सी हृदय से कोमल है। राजेन्द्र यादव के शब्दों में "मित्रो हिन्दी की अकेली ऐसी कथा नारी लगती है जो सदियों से लड़े गए संस्कारों, सम्बन्धों, सुन्दर उपमाओं को ललकारती, मुँह चिढ़ाती और उन्हें इठलाती हुई अपनी मूलभूत जरूरत और जवान के साथ हमारे सामने आ खड़ी है। छिन्न मस्ता काली की तरह, और मानो हम उसके तेज को बर्दाश्त नहीं कर पाते।"[8]

ममता कालिया की कहानी'छुटकारा' की नायिका प्रेमी में अपने प्रेम को खोजती है। इसमें प्रेम की समस्या है। इसकी नायिका और बत्रा में एक प्रकार की निकटता और आत्मीयता का संबंध था। वे काफी समय में दोस्त चले आ रहे हैं। कभी वह सोचती है कि वे दोनों प्यार करते और कभी सोचती है कि नहीं। वह अपनी प्रेमी से न जुड़ पाने और जुड़ पाने की स्थिति का विश्लेषण करती हुई कहती है– "मैं चाहती थी, वह ऐसे अकेला न हो, पर उसके लिए मैं कुछ नहीं कर सकती थी। किसी के अकेलापन का मर्म समझकर भी उसे बाँट न सक पाना करुणा होता है। इतना गीलापन हमारे स्वभावों के विपरीत था।"[9] इसलिए वह अपने प्रेमी से अलगाव पा लेती है।

प्रेम के क्षेत्र में समर्पण की भावना आज नहीं के बराबर है। प्रेमी प्रेमिका स्वयं अनुभूत करते हैं कि प्रेम में स्थायित्व नहीं है।

दाम्पत्य जीवन में दरार

दाम्पत्य जीवन में प्रेम का अत्यधिक महत्व है। प्रेमहीन दाम्पत्य जीवन नीरस, असफल बन जाता है। मृदुला गर्ग के 'चितकोबरा' उपन्यास की नायिका मनु एक साधारण सी नारी, अपने पति और बच्चों की देखभाल में लगी हुई थी। मनु के लिए प्यार ही आदर्श है जिसे वह अपनी जिंदगी का सच मानती है। लेकिन अपने पति महेश का व्यवहार उसकी आकांक्षाओं से परे थे। महेश कहता है– 'विवाह के बन्धन में मेरा विश्वास नहीं हैं मनु।[10] महेश विवाह बन्धन में अविश्वास रखते हुए अन्य स्त्रियों को पाने की तलाश में है। पति द्वारा हुए बेइजत्ती अनु पर बुरा प्राभाव पड़ता है। ऐसी अपनी वैयक्तिक और सामाजिक मान्यता को छोड़कर अपनी मर्जी से जीने के लिए बेबस बन जाती है। वह परंपरागत आदर्शों को नकारती है। मनु यों सोचती है– "मैं चुपचाप उसे वह सब देने में जुट गई थी, जो मेरे खयाल से एक औसत पति, स्त्री से चाह सकता था। सुन्दर, सुचारु, घर–गृहस्थी, साफ–स्वस्थ बच्चे, सजी–सँवारी–सुघड़ पत्नी। दोस्तों की भरपूर खातिरदारी, सामाजिक मेल–मिलाप।(मृदुला गर्ग, चितकोबरा पृ 89) जब कि मनु को पति से प्रेम उपलब्ध नहीं था, उस पीड़ा में उसका मन बदल उठता है। दाम्पत्य जीवन की

ऊब और घुटन की विडम्बना से मनु, रिचर्ड हचिसन के उदात्त प्रेम को स्वीकार कर मुक्त होती है। इसप्रकार मनु सामाजिक नैतिक परंपरा को टुकराकर अपने को मानव स्थापित करती है। उसके आगे शरीर नगण्य है, जबकि रिचर्ड से, उसके शरीर संबंध से वह भारतीय नैतिक माप का तिरस्कार करती है।

सांस्कृतिक परिवर्तन

उपभोक्तवाद और वैश्वीकरण के बल पर टिकी आधुनिकता ने इतिहास के साथ सनातन सार्व–भौमिक मूल्यों की भी समाप्ति घोषित कर चुकी है। ममता कालिया का 'दौड़' का नायक पवन के शब्दों में– "पापा मेरे लिए शहर महत्वपूर्ण नहीं है– कैरियर है,अब कलकत्ते को ही लीजिए, कहने को महानगर है, पर मार्केट्टिंग की दृष्टि से एक दम लद्दह। कल्कत्ते में प्रोड्यूसेर्स का मार्केट है, कणस्युमेर्स का नहीं। मैं ऐसे शहर में रहना चाहता हूँ, जहां कल्चर हो न हो, कोंसुमर कल्चर जरूर हो, मुझे संस्कृति नहीं, उपभोक्ता संस्कृति चाहिए, तभी मैं कामयाब रहूँगा।" (ममता कालिया दौड पृ 41) घर के संस्कारों को एकदम त्यागनेवाले नई पीढ़ी के लिए भारतीय संस्कृति से कोई मतलब नहीं है। उनका संबंध सीधा बाजार से हैं ।

आज के विकासोन्मुख समाज में सबसे चर्चित शब्द है 'मूल्य'। इसलिए कि मूल्य मानव समाज की रीढ है। मानव के व्यक्तित्व का विकास मूल्य ही करता है। व्यक्ति और समाज से निरपेक्ष होकर मूल्यों का कोई अस्तित्व नहीं क्योंकि तीनों अन्योन्याश्रित है। जैसे जैसे समय बदल रहा है, वैसे वैसे समाज और मनुष्य भी बदल रहे हैं, समय, संदर्भ एवं समाज की आवश्यकता के अनुसार मूल्य में परिवर्तन होता है। परिवर्तन से ही समाज का विकास होता है। सामाजिक परिवर्तन के साथ साथ स्त्री की स्थिति में भी सर्वदा परिवर्तन आया है। कभी उसे नितांत उपेक्षात्मक वातावरण में जीने को ,कभी उन्मुक्त रूप से विचरण करने को बाध्य होना पड़ा है। कुछ मूल्य ऐसे होते हैं जो परिवर्तित होने के लिए मजबूर होते हैं, समय की दावा होती है। आनेवाली पीढी को स्पष्ट संकेत दे सकते हैं कि अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए